B.A-1 (H)
Paper - 1

क्लासिकी अनुकूलन तथा क्रिया प्रसूत अनुबंधन में अंतर -

क्लासिकी अनुकूलन	क्रिया प्रसूत अनुबंधन
(1) यह सिद्धांत पावलव द्वारा प्रतिपादित किया गया है	(1) यह सिद्धांत स्किनर द्वारा प्रतिपादित किया गया है।
(2) यह सिद्धांत टाईप-शिक्षण के नाम से प्रसिद्ध है	(2) यह सिद्धांत टाइप-2 अधिगम के नाम से प्रसिद्ध है।
(3) इसमें अनुक्रिया स्वाभाविक रूप से होती है।	(3) इसमें अनुक्रिया ऐच्छिक रूप से होती है.
(4) इसमें S-R साहचर्य समीपता के नियम पर आधारित है।	(4) इसमें S-R साहचर्य प्रभाव के नियम पर आधारित है
(5) यह प्राणी के स्वचालित तंत्रिका तंत्र से संबंधित है	(5) यह प्राणी के केंद्रीय तंत्रिका तंत्र से संबंधित है।
(6) इसमें अनुक्रिया करने के पूर्व ही प्रबलन दिया जाता है	(6) इसमें अनुक्रिया करने के पश्चात प्रबलन दिया जाता है।
(7) यह एकल S-R बंध पर जोर देता है।	(7) यह श्रृंखला S-R बंध पर जोर देता है।
(8) इसमें व्यवहार आंतरिक होता है	(8) इसमें व्यवहार वाह्य होता है।
(9) इसमें प्रयोगकर्त्ता प्रयोज्य से व्यवहार करवाता है।	(9) इसमें प्रयोज्य स्वयं अनुक्रिया करता है।

(10) इसमें प्रयोज्य को नियंत्रण में रखा जाता है।	(10) इसमें प्रयोज्य विभिन्न प्रकार की गतियाँ करने के लिए स्वतंत्र होता है।
(11) इसमें CR तथा UR समान होते हैं- जैसे - भोजन खाना	(11) इसमें SR तथा UR एक समान नहीं होते हैं जैसे - लीवर दबाना।
(12) इसमें CS तथा UCS एक साथ प्रस्तुत किये जाते हैं।	(12) इसमें केवल प्रयोज्य को प्रयोग की स्थिति में रखा जाता है।
(13) इसे S-R रूप में व्यक्त किया जाता है	(13) इसे R-S के रूप में व्यक्त किया जाता है।
(14) यह सिद्धांत केवल पशु अधिगम तक ही सीमित है	(14) यह सिद्धांत पशु अधिगम के साथ-साथ मानव अधिगम के लिए भी उपयोगी है।